DOI: https://doi.org/10.46632/cllrm/4/3/4

Contemporaneity of Language and Literature in the Robotized Millennium
Vol: 4(3), 2022
REST Publisher; ISBN: 978-81-936097-3-6
Website: http://restpublisher.com/book-series/cllrm/

कवि कर्म एवं मीडिया कर्म

डॉ रम्या राज आर

ई-मेल : 88remyaraj@gmail.com

मीडिया और कविता दोनों का जन और जीवन से अटूट संबंध है। जहां मीडिया सी-सरल तरीके से जन-जीवन के बारे में जनता से संवाद करती है वहां कविता अपने अंदर समेटती संवेदना का प्रसारण करती है। दोनों का कर्म एक है, रास्ते अलग हैं। जो भी हो, कर्म की पूर्ति किस ढंग से होती है उसके आधार पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव की चर्चा होती है। कर्म के आधार पर सफलता का मूल्यांकन होता है। वास्तव में जनता के सम्मुख अनगिनत कविताएं हैं अनगिनत मीडिया भी। इसलिए स्तर की चर्चा करना पड़ती है।

कविता की विशेषता यह है कि वह शब्दों से नहीं बनती, खाली जगहों से बनती है। कविता का आस्वादन तब सफल होती है जब शब्दों के बीच या पंक्तियों के बीच छूट गई खाली जगहों को पाठक या आस्वादन करने वाला समझ सकता है। यहां कवि और पाठक दोनों का बौद्धिक कर्म आवश्यक है। कवि का मन अहं के भाव से बाहर आकर पूर्ण रूप से एकाग्र होकर विषय से संवाद करता है, वह कभी गहरी सांस से हो सकती है, कभी गहरी चुप्पी से हो सकती है, तब अभिव्यक्ति की पूर्णता होती है। "किनारे पर खड़े होकर समुद्र की गहराई की नाप बताना बौद्धिकता है। धारा में डूबते हुए गहराई में उतरते जाना कविता है।"(कविता में संवेदनाओं का आदान-प्रदान होता है। यह संवेदना जब पाठक या सहृदय खुले मन से स्वीकार करता है वहीं से कविता जनता की अपनी हो जाती है और अपने कर्म से तादात्म्य प्राप्त करती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'मैंने कब कहा' की पंक्तियां यह बताती हैं - " मैं नया कवि हूं/ इसी से जानता हूं/ सत्य की चोट बहुत गहरी होती है,/ मैं नया कवि हूं-/ इसी से मानता हूं-/ चश्मे के तले की दृष्टि बहरी होती है,/ इसी से सच्ची चोटें बाँटता हूं/ झूठी मुस्कानें नहीं बेचता।"(सं: अज्ञेय, तीसरा सप्तक, पृ.सं. 232) कविता और कवि इस तरह विचार करते हैं।

मीडिया लोकतंत्र के चार मुख्य स्तंभों में चौथा है। वास्तव में मीडिया आम जनता की आवाज है। विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका आदि तीनों स्तंभों को रास्ता दिखाना मीडिया का काम है। जब अपने सम्मुख असंगत वृत्तियों की भरमार होती है तब उसे जनता के सम्मुख खुल कर दिखाना उसका दायित्व है। फिलहाल सोशल मीडिया व्यापक हो रही है, ताकि एक खबर को लेकर तरह तरह की कहानियां छेड़ी जाती है। इनमें

Copyright@ 2022 REST Publisher

से असली कहानी कौन सी है पहचानना कठिन हो गया है। ऐसे अवसर पर मीडिया को ईमानदारी के साथ सच्चाई को सामने लाना है। शैलेश शुक्ला के शब्दों में- "सूचना का लोकतंत्रीकरण हो रहा है और सूचना अब रूप से विचरण कर रही है। सूचना की इस उन्मुक्तता को संभव बनाया है 'न्यू मीडिया' ने।"(शैलेश शुक्ला, 'न्यू मीडिया में हिंदी की वर्तमान स्थिति', https://rajbhasha.gov.in) मीडिया को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता है। अपनी ज़िम्मेदारी को वह पूर्ण रूप से निभा रही है क्या? सोचने की बात है।

मीडिया और कविता दोनों का कर्तव्य है कि अपने समय से टकराव करना और वर्तमान समस्याओं से जूझना। कभी-कभी दोनों में ऐसी समस्या आ पडती हैं कि वे अपने कर्म से दूर जाते हैं। इसके अनेक कारण हैं। कवि कभी पक्षपात होकर या पूर्वाग्रह के साथ कविता का निर्माण करता है तो कविता भी अपनी स्वतंत्रता को खो बैठती है। फलस्वरूप कविता मूल संवेदना का प्रसारण करने में असफल होतो है। मीडिया की भी ऐसी बाधाएं आ पड़ती हैं - टीआरपी के लिए या कमाई के लिए असत्य खबरों का प्रसारण करना, विज्ञापनों का अधिकतम चित्रण करना, नकारात्मक खबरों की ज्यादती होना जिसमें सकारात्मक सोच का अभाव होता है, ढोंग आर आडंबर को बढ़ावा देना, पीत पत्रकारिता आदि उदाहरण हैं। मीडिया के संबंध में कभी-कभी ऐसी भी एक सोच चलती है कि मीडिया आलोचना की सीमा में नहीं आती, परंतु मीडिया के बारे में बहुत सारी कविताएं लिखी जाती है।

हकीकत यह है कि मीडिया और कविता दोनों जनता के दु:ख-दर्द को प्रसारित करने वाले माध्यम हैं। जन-साधारण की जीभ है। दोनों को हाशिएकृत वर्ग का संबोधन करना है जैसे कि स्त्री, दलित, आदिवासी, परिस्थिति आदि। जहां मीडिया चित्र एवं नूतन तकनीकी के माध्यम से समस्याओं का हल करने के लिए कोशिश करती है वहां कविता संवेदनशील सहृदय पाठकों से बर्ताव करती है। अंतर यह है कि कवि एक नई सृष्टि का कार्य करता है जहां मूल संवेदना तक पहुंचना सहृदय का काम है। मीडिया घटित घटना को अपने ढंग से प्रस्तुत करती है यानी कि वह आम जनता से सीधी बात करते है। दोनों को दीर्घदर्शी होना जरूरी है तथा संभावित घटनाओं की तीव्रता नापना उनका दायित्व है। संवेदनशील मन का संरक्षक कविता है तो लोकतंत्र का संरक्षक मीडिया है। कविता का सीधी बात करने का एक उदाहरण निलय उपाध्याय की कविता 'घंटा कवि' की निम्नलिखित पंक्तियां दे रही हैं- "कह दो/ हवा सांस लेने लायक नहीं/ कह दो/ पानी पीने लायक नहीं/ कह दो/ अन्न देना बंद करने वाली है धरती/कह दो/ वापस जा रही है गंगा/ प्रलय शैया पर है देश"